ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

भारतीय शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्व

Importance of Restrictions in Indian Classical Music

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

अनुपमा सक्सेना
अध्यक्षा,
सह प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज,
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारतीय संगीत का विश्व जगत में विशिष्ट स्थान है, तथा मानव जीवन एवं प्रकृति के कण–कण में रचा बसा है। संगीत मानव मन को आकर्षित करने की कला है, जो आत्मिक सुख की अनुभूति कराने में सक्षम हैं। हमारे सांस्कृतिक जीवन प्रणाली में समस्त ललित कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। ललित कलाओं में संगीत को सर्वोपरि माना गया है। संगीत का इतिहास अन्य कलाओं के इतिहास की अपेक्षा भिन्न है, क्योंकि संगीत का प्रत्यक्ष रूप नहीं है। संगीत की श्रृंखला में भारतीय शास्त्रीय संगीत पूरे विश्व भर में प्रमुख स्थान रखता है। जिनकी पूरे भारतवर्ष में प्रचलित करने का श्रेय इन दो महान विभूतियों को जाता है। वह है – पंडित विष्णु नारायण भातखंड़े एवं विष्णु दिगम्बर पलुस्कर। भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से मानी गयी है। वेदों में सामवेद को संगीतमय माना गया है। प्राचीन काल में संगीत का रूप अलग था। जनरूचि के अनुसार संगीत में परिवर्तन आता गया। सप्त स्वरों को पक्षियों के स्वर से निकाला। इन्हीं से थाट निर्मित हुए। थाट से राग का निर्माण हुआ। रागों में सिर्फ स्वर का ही समावेश नहीं होता, वरन् उसमें भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वर भाषा के संयोग से राग में बंदिश का आर्विभाव होता है। बंदिश में मुख्य राग, उसमें लगने वाले स्वर, लय, ताल का उचित समावेश होना आवश्यक है। इन सबके मिश्रण से ही राग द्वारा रसानुभूति संभव है।

Indian music has a special place in the world, and is composed in every particle of human life and nature. Music is the art of attracting the human mind, which is capable of feeling spiritual pleasure. All the fine arts have an important place in our cultural life system. Music is considered to be paramount in the fine arts. The history of music is different from the history of other arts, as music is not a direct form. In the series of music, Indian classical music occupies a prominent position all over the world. These two great personalities whose credit for spreading the whole of India goes to them. He is - Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande and Vishnu Digambar Paluskar. The origin of Indian classical music is traced to the Vedas. In the Vedas, the Samaveda is considered to be musical. The form of music was different in ancient times. According to public interest, there was a change in music. Sapta vowels were extracted from birds. These were the things that were created. Thaat was formed from the raga. The ragas not only include the voice, but the language has an important contribution in it. Bandhav is formed in the raga due to the combination of Swara Bhasha. The main raga in Bandish, it is necessary to have proper inclusion of the vocals, rhythms, rhythms involved in it. It is only by mixing all of these that Rasabhubhuti is possible by raga.

मुख्य शब्द : भारतीय शास्त्रीय संगीत, राग, बंदिश।
Indian Classical Music, Raga, Bandish.

प्रस्तावना

संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में अनेक मान्यतायें प्रचलित हैं। कहा जाता है कि संगीत का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ है। संगीत को उतना ही प्राचीन माना गया है, जितना कि मानव। भाषा से पूर्व संगीत ही एक ऐसा सूत्र था जो मानव को सामाजिकता का ज्ञान देता था। सन्ध्या के समय अग्नि को प्रज्जवलित कर एक काष्ठ द्वारा जमीन पर या किसी वस्तु पर जोर–जोर से आघात करके उस उत्पन्न लय को अपने नृत्य द्वारा अपने भावों को प्रकट करते हुए भाषा एवं स्वर के बिना मानव संगीत का आनन्द लेता था। शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकार" में संगीत विषय की व्याख्या इस प्रकार से की है –

"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्तयं मुच्यते।"

अर्थात् – गायन वादन एवं नृत्य तीनों के समावेश से संगीत का प्रस्फुटन हुआ है। दामोदर पंडित के "संगीत दर्पण" में संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी है।

"द्रुहिरोन यदन्विष्टं प्रयक्तं भरतने च।
महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विमुक्तिदम्।।4।।[1]

अर्थात् – जिस संगीत को ब्रह्मा ने शोध कर निकाला भरतमुनि ने महादेव के सामने जिसका प्रयोग किया तथा जो मुक्तिदायक है। वह मार्गी संगीत कहलाता है। भारतीय परम्परा के अनुसार ब्रह्मा और शिव संगीत के ही नहीं, वरन् अन्य विधाओं के भी आचार्य माने गये हैं। ब्रह्मा जी ने यह कला शिव को दी और शिव के द्वारा सरस्वती को प्राप्त हुई जिसका विस्तार प्राचीनकाल से आज तक चला आ रहा है। संगीत नाद तत्व पर आधारित है। ऋषियों और मुनियों के मतानुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु में नाद समाहित है। नाद के बिना ब्रह्मा रहित सृष्टि की कल्पना एवं नाद रहित सृष्टि की कल्पना असंभव है। मूलभूत नाद ब्रह्मा से भी संगीत की उत्पत्ति मानी गयी है। प्राचीन कल में जाति, मूर्च्छना द्वारा गायन होता था। संगीत वैदिक काल से ही मानव जीवन में चला आ रहा है। वैदिक काल में चार वेदों की रचना हुई ऋग्वेद, सामवेद, युर्जःवेद तथा अर्थववेद। इन चार वेदों में सामवेद को पूर्ण रूप से संगीतमय माना गया है। इस वेद के द्वारा संगीत को नियम और विधान में आबद्ध कर दिया गया था। सामज्ञान से पूर्व केवल तीन स्वरों का प्रयोग किया जाता था।

"उद्वात्ते निषादगान्धारा व मुदात्तें ऋषभधैवतौ।
स्वरित प्रभवा स्येते षड्ज मध्यपंचमा।।[2]

अर्थात् उदात्त नि ग, अनुदात्त रे घ, स्वरित स म प। "पाणिनी शिक्षा" तथा "नारदीय शिक्षा" के श्लोक के मतानुसार सप्त स्वरों का वर्णन उनके उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के अन्तर्गत किया गया है। इस प्रकार सप्त स्वरों का विकास हुआ। संगीत स्वरों पर आधारित है। स्वरों के मरध्यम से ही संगीत की रचना हुई है। दामोदर पण्डित ने संगीत के सप्त स्वरों के पक्षियों के स्वर से निकाला है –

"षड्ज वदाति मयूरः पुनः स्वरमृषभः चातको व्रूते।
गंधाराख्यां छागो निगदति च मध्यमं क्रोचः (170)
ग्दति पंचममंचितवाक् पिको रटति धैवतभुन्मददुर्दरः।
श्रृणि समाहत मस्तकंकुन्जरो गदति नासिकया
स्वरमंतिरम्।। (171)3

जैसे – "मोर से षड्ज, चातक से रिषभ, बकरी से गन्धार, कौआ से मध्यम, कोयल से पंचम, मेंढक से धैवत, और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति हुई। इन्हीं स्वरों द्वारा थाट का निर्माण हुआ। थाट से रागों का स्वरूप निर्धारित किया गया।

राग भारतीय संगीत का सबसे महत्वपूर्ण तत्व ही नहीं वरन् भारतीय संगीत का प्राण है। पाश्चात्य संगीत में जो हारमनी संगीत का स्थान है वही भारतीय संगीत 'मेलाडी या राग संगीत के लिए प्रसिद्ध है। हिन्दुस्तान संगीत में राग की जो प्रमुख विशेषता है, वो किसी अन्य देश के संगीत में नहीं है।

"रंज्जयतीति रागः[4] अर्थात् – जिससे चित्त क रंजन हो, वह राग कहलाता हैं राग शब्द का सर्वप्रथम व्याख्या मतंगमुनि ने अपने ग्रंथ "बृहद्देशी" में की है। स्वर, वर्ण से विभूषित उस ध्वनि विशेष को राग कहते हैं।

"स्वरवर्ण विशेषेण ध्वनि भेदेन का पुनः।
रज्जयते येन यः कश्चित् स रागः संमतः सताम्।।
अथवा
याऽसौ ध्वनि विशेषस्तु स्वरवर्ण विभूषितः
रंजको जनचिन्तानां स च रागः उदाहृतः ।।[5]

अर्थात् – जन चित्त–रंजक ध्वनि विशेष को राग की संज्ञा दी गई है। राग के विषय में अलग–अलग ग्रंथकारों ने अपने–अपने ढंग से अपने विचारों को व्यक्त किया है। रागों का स्वरूप, उनके लक्ष्ण एवं नियमों पर आधारित है। इन्हीं के आधार पर राग एक–दूसरे से अलग होते हैं तथा इसी के द्वारा रागों का अपना अलग रूप व पहचान बनती है।

रागों में बंदिश एक महत्वपूर्ण आधार है, जिस पर हमारा शास्त्रीय संगीत का महल खड़ा है। "बंदिश" अर्थात् – बंधा हुआ। जिसका उद्गम एवं विकास स्वर, लय, ताल, शब्द के माध्यम से होता है, वही 'बंदिश' कहलाती है। बंदिश प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय संगीत में अग्रसित है। प्राचीनकाल में संगीतकार वही माना जाता था, जिसमें गायक व नायक के गुण हों। राग गाते समय बंदिश के शब्दों एवं राग के स्वरों को ध्यान में रखते हुए सौन्दर्यात्मक एवं आकर्षक बनाया जाता था, जो व्यवस्था आज तक प्रचलित है। संगीत और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। बिना साहित्य के संगीत अधूरा हैं प्राचीनकाल से आजतक भारतीय संगीत के क्षेत्र में समयानुकूल बंदिशों के रूप में परिवर्तन होता चला आ रहा है। ज्ञान के विकास को देखते हुए पुरातन की ओर देखना पड़ता है।

जिस प्रकार गायन में रागों के अन्तर्गत ख्याल गाये जाते हैं, उसी प्रकार वादन शैली में बंदिश को गत कहते हैं दोनों में शब्द और बोलों का अन्तर है परन्तु गायन वादन द्वारा भावों को व्यक्त करने का एक ही माध्यम 'भाव' है। गायन में ख्याल दो प्रकार के माने गये हैं – विलम्बित ख्याल, द्रुत ख्याल। वादन में, रजाखानी गत, मसीतखानी गत। ख्यालों में बंदिशों का महत्वपूर्ण योगदान है। फिर चाहे वह उपशास्त्रीय में ठुमरी, कज़री, ध्रुपद घमार कोई भी गायन शैली हो। बंदिश रचयिता को संगीत शास्त्र और साहित्यशास्त्र का ज्ञान बहुत आवश्यक है। संगीतज्ञों के अभ्यास, योग्यता, अनुभव, कला कौशल और प्रतिभा और प्रतिभा पर ही बंदिश का सौन्दर्य और आकर्षण आधारित है। जो श्रोता को बांध सके। बंदिश सरल और सुगत होनी चाहिये। बंदिश का चयन रागदारी के अनुसार होना चाहिये। क्योंकि प्रत्येक राग का अपना अलग स्वरूप होता है। सर्वप्रथम मुख्य राग, उसमें लगने वाले स्वर, लय, ताल इन सबका समावेश बंदिश की बनावट में संतुलित प्रयोग करना चाहिये। तभी वह सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति करा सकता है। राग का गायन–समय, ऋतु का उचित प्रयोग बंदिश को सफल बनाने में प्रभावशाली होते हैं किसी राग की प्रकृति करूण है तो बंदिश में स्वरों एवं शब्दों का चयन भी करूणा भाव

का होना चाहिये। उदाहरण के लिए – राग भैरवी, थाट से उत्पन्न होता है। इसके सभी स्वर कोमल लगते हैं। गायन–वादन समय प्रातःकाल हैं भैरवी द्वारा स्त्री, करूणा, श्रृंगार सौम्यता एवं दया के भाव उत्पन्न किये जा सकते हैं। इसका गायन मनोहर, मधुर, आकर्षक एवं रूचिवर्धकता प्रदान करता है। इन्हीं सर्वगुण सम्पन्न होने के कारण यह अत्यन्त लोकप्रिय रागों में से एक है। राग भैरवी के स्थाई के माध्यम से एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यह बंदिश भातखंडे जी की क्रमिक पुस्तक मालिका से उद्घृत हैं।
स्थाई –

नि़ – घ़ – नि़ ऽ जा ऽ ए 3	सा – रे सा तू ऽ म न x म	रे ग रे ग म गु रू च र 2	रे ग रे सा न श र न 0
सा ध प ध ए ऽ क भ 3	– पम रे ग ऽ वऽ ध र ग	रे सा – रे म अं ऽ त र 2	ग रे ग रे सा मों ऽ ध न 0 6

प्रस्तुत राग की बंदिश के द्वारा स्वरों का समायोजन शब्द, ताल, लय, गायन–समय के माध्यम से करूणात्मक का भाव है। इस प्रकार ऋतु के अनुसार भी कई रागों का निर्माण हुआ। जैसे – बसंत, बहार, मियां मल्हार, मेघ मल्हार। उदाहरण मेघ मल्हार वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला राग है। इसके स्वरों का संयोजन ही ऐसा है जो ऋतु के अनुसार उचित वातावरण को दर्शाता है जैसे – रे म रे सा, नी़ प़ सा, सा रे रे, रे म म, सा रे म रे, रे म, रे सा नि़ प़ नि़ सा रे, म रे, प, रे म रे सा। इस राग में ऋषभ पर होने वाले आंदोलन इस राग को पहचानने में सहायता देते हैं। 'म रे प' यह मल्हार राग का स्वर–विन्यास इसमें ही प्रमुख रीति से गाया जाता है। स्वरों के साथ ही बंदिश में शब्दों, ताल का समन्वय ऋतु के अनुसार आवश्यक है। इस राग में, गरज, बरस, उमड़, घुमड़ में चमक बिजुरिया इस तरह के शब्द बंदिश में अधिकर प्रयोग किए जाते हैं। सबके मिश्रण से ही राग ऋतु राग कहलाएगा।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में दो पद्धतियां प्रचलित है – उत्तर भारतीय संगीत पद्धति एवं दूसरी दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति। दोनों पद्धतियों की अलग–अलग विशेषता है। इन दोनों पद्धतियों का श्रेय दो महान विभूतियों को जाता है वह है – पंडित विष्णु नारायण भातखंडे एवं विष्णु दिगंबर पलुस्कर। दोनों का संगीत को अग्रसर करने में बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने संगीत कला को व्यवस्थित पहचान और शिक्षा दीक्षा देकर महान प्रयास किया। क्रियात्मक पक्ष में अनेक नवीन बंदिशों का निर्माण एवं स्वर लिपिबद्ध कर संगीत के क्षेत्र को फलीभूत किया जिसके कारण आज हम उसे ग्रहण कर सभी शिक्षण संस्थाएं उसका लाभ उठा रहे हैं।

भारतीय संगीत में बंदिशों को हर तरह से व्यवस्थित करने में घरानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक घराने की गायन वादन शैली अपनी भिन्न–भिन्न विशेषताओं से परिपूर्ण होती है। सांगीतिक परिपेक्ष में घराना तथा शिष्य के संयोग से बनता है। यहाँ हम भिन्न–भिन्न घरानों की विशेषताओं को पूर्ण रूप से विस्तृत करना सम्भव नहीं है, अन्यथा हम सूक्ष्म रूप से उदाहरणतः घरानों के गुणों का वर्णन कर सकते हैं। शास्त्रीय संगीत में गायन वादन दोनों ही शैलियों में ख्याल एवं गत के प्रचार–प्रसार के संदर्भ में घराने विशेष स्थान रखते हैं। संगीत के क्रियात्मक पक्ष में 'घराना' शब्द से तात्पर्य भारतीय संगीत के साधारण भाषा में घर, कुटुंब परिवाार वंशानुगत आगे चलाने की परंपरा से है। कुछ प्रमुख घरानों की परंपरा तथा गायन के क्षेत्र में विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण प्रकार से है –

ग्वालियर घराना ख्याल गायकी के प्रतिष्ठित घरानों में ग्वालियर घराना सर्वाधिक पुराना माना गया है। इस घराने के विकास में हस्सू खाँ, हद्दू खाँ के अतिरिक्त हस्सू खाँ के शिष्यों में वासुदेव राव जोशी, बाबा दीक्षित तथा देवजी परांजये का नाम प्रमुख रूप से गिने जाते हैं। वासुदेव राव जोशी के प्रमुख शिष्य बालाकृष्ण बुआ इचलकंरजीकर तथा पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर रहे। इस घराने की प्रमुख विशेषताएं जोरदार एवं खुली आवाज का प्रयोग गमक, सीधी पल्लेदार एवं दानेदार तानों का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है। इस घराने के ख्याल की बंदिशों में झूमरा, एकताल, आड़ाचारताल में बजाई जाती है। बंदिश के साथ लय का प्रयोग न बहुत विलंबित न बहुत कम होता है। किराना घराना – इस घराने का नामकरण किराना घराना, किराना के आधार पर हुआ। इस घराने के मूल गायक अब्दुल करीम खां किराना के निवासी थे। ऐसा कहा जाता है कि इस घराने के प्रचार के कारण इसका श्रेय उन्हीं को जाता है। इस घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में श्रीमती हीराबाई बड़ोदकर, सरस्वती बाई राणे बालकृष्ण बुवा, कपिलेश्वरी, रोशन आरा बेगम आदि नाम उल्लेखनीय है। वर्तमान में स्वर्गीय गंगूबाई

हंगल एवं पंडित भीमसेन जोशी श्रीमती माणिक वर्मा के नाम प्रसिद्ध है। इस घराने की विशेषता है – राग की बंदिश द्वारा सहज कोमल भाव, कलात्मकता, आलाप प्रधान राग के कुछ स्वरों को आपस में इधर–उधर करके बोलना। कोमल प्रकृति के भावपूर्ण राग जैसे दरबारी, तोडी, मालकोश, ललित, मुल्तानी, पूरिया, मारू बिहाग आदि राग किराना घराने के विशिष्ट रागों में से हैं।[7]

अध्ययन के उद्देश्य

1. राग एवं बंदिशों का ज्ञानपरक आकलन।
2. राग में बंदिश के माध्यम से भावों को जनमानस तक पहुँचाना।
3. गायन वादन के परिप्रेक्ष्य में रागों का कलात्मक सौन्दर्य संयोजन।

शोध प्राविधि

पुस्तकों का पठन–पाठन, वार्त्ता द्वारा, शोध पत्रों द्वारा ज्ञानवर्धन।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत राग प्रधान है जिसमें नियमों की बाध्यता होती हैं रागों में प्रयुक्त स्वर, ताल एवं शब्दों का उचित चयन द्वारा बंदिशों की रचना की जाती है जो कि परम्परानुसार होनी चाहिये। गायक और वादक दोनों को ही शास्त्र के नियमों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य होता है। शास्त्रीय संगीत में बंदिश को बहुत महत्व दिया जाता है। बिना बंदिश के राग अधूरा है। जिस प्रकार गायन में गायक विभिन्न प्रकार स्वरों, बंदिशों के माध्यम से रागों को प्रस्तुत कर अलंकृत करता है। उसी प्रकार भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्य जैसे – सितार, वायलिन, शहनाई, बांसुरी, तबला सारंगी आदि वादन शैली में अलग–अलग घरानों की भिन्न–भिन्न विशेषताओं के साथ वादक बंदिशों के साथ विभिन्न प्रकार की स्वर–संगतियों, यकारियों को वाद्यों द्वारा जुगलबन्दी से सुशोभित कर प्रदर्शित करते हैं। इन सबके संयोजन से ही श्रोता रसानुभूति का रसास्वादन कर सकता है।

संगीत एक क्रियात्मक कला है जिसे अपनी सुन्दर प्रतिमा के साथ श्रोताओं तक अपने भावों को गायक वादन पहुँचाता है। यह कलाकार की प्रस्तुतिकरण पर निर्भर करता है कि वह सरल, सुन्दर तरीके से श्रोताओं को कैसे सौन्दर्यानुभूति करा सकता है। संगीत जीवन पर्यन्त एवं गुरूमुखी साधना है। बंदिश का रागों में महत्वपूर्ण योगदान है जिसे परम्परागत तरीके से एवं उसकी नींव को बचाये रखना हमारा कर्तव्य है। परम्परा को सुरक्षित रखते हुए नवीन प्रयोग होने चाहिये जिससे श्रोताओं को आसानी से शास्त्रीय संगीत समझ आ सके एवं नये शोध कर उसे और प्रतिष्ठित बनाये जिससे शिक्षक विद्यार्थी सभी लाभांवित होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संगीत दर्पण – दामोदर पंड़ित पृष्ठ – 6*
2. *Sangeet Natak – The Nardiya Shiksha on the evolution of the Heptatonic Scale – Dr. Venkitarubramonia Iyer, page 7*
3. *संगीत दर्पण – दामोदर पंडित पृष्ठ – 70*
4. *संगीत रत्नाकर – पंडित शारंगदेव पृष्ठ – 3*
5. *वृहद्देशी – मतंग मुनि – श्लोक – 280–281 पृष्ठ 29*
6. *क्रमिक पुस्तक मालिका – पंडित विष्णु नारायण भातखंडे भाग 2 पृष्ठ–394*
7. *नाद कंपन – डॉ0 परमानंद बंसल डॉ0 ज्ञानचंद – पृष्ठ–55*